दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 25.09.2019

प्रकाशनार्थ

राजनीतिशास्त्र विभाग के तत्वावधान में 'पं. दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानव दर्शन' विषय पर एक परिचर्चा

आज दिनांक 25.09.2019 को महाविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग के तत्वावधान में 'पं. दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। जिसमें विभाग के लगभग 18 छात्र/छात्राओं ने 'पं. दीनदयाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व' की चर्चा करते हुए उक्त विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। श्रेया राय बी.ए. प्रथम वर्ष ने कहॉ कि 1947 में जब भारत को स्वाधीनता प्राप्त हुई तो उस समय हमारे देश में पश्चिमी विचारधारा से प्रभावित नेतृत्व मौजूद था। तत्कालीन भारत में मौजूद विभिन्न समस्याओं का मूल कारण भारत की राष्ट्रीय पहचान उसकी अस्मिता और राष्ट्र धर्म की उपेक्षा थी। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी भारत की राष्ट्रीय अस्मिता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, धर्म एवं संस्कृति के सनातन मूल्यों के आधार पर भारत के वैभव की पुनर्स्थापना करना चाहते थे। राज वर्मा बी.ए. द्वितीय वर्ष ने कहा कि पं. दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन को एकात्म मानवतावाद कहना किसी भी दृष्टि से न्यायोचित नहीं है। पं. दीन दयाल उपाध्याय के दर्शन को मानव दर्शन' कहा जाना ही उनके विचारों के साथ न्याय करना समझा जाएगा। एकात्म मानव दर्शन के केन्द्र में व्यक्ति है। यह मानव केन्द्रित दर्शन है। सृष्टि में मानव, परिवार, समाज, राष्ट्र, सृष्टि और अन्ततः अखिल ब्रह्माण्ड में एकता ही एकात्म मानव दर्शन का मूल है। शैलजा चौधरी, एम.ए. प्रथम वर्ष ने कहा कि एकात्म दर्शन का उद्देश्य समाज के अन्तिम व्यक्ति का कल्याण करना है। शिवागी पाण्डेय, निशान्त मिश्रा, धीरज रस्तोगी, रामरतन, बब्लू कुमार, शुभम मिश्रा, सुमित राय, अभिनव साहू, आदर्श आदि छात्रों ने भी उक्त विषय पर अपना विचार व्यक्त किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राजनीति विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. वीणा गोपाल मिश्रा ने कहा कि जब तक इस सृष्टि पर मानव का अस्तित्व हैं। पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन सदैव प्रासंगिक रहेगा। यह समाज के अन्तिम पायदान पर बैठे व्यक्ति के समग्र विकास एवं कल्याण का दर्शन है, पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म दर्शन। उन्होने कहा कि भारत की सनातन विचारधारा को युगानूकूल रूप में प्रस्तुत करने का कार्य पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने किया और समग्र रूप से वही है, एकात्म दर्शन।

उक्त कार्यक्रम में विभागीय अस्सिटेंट प्रोफेसर डॉ. शैलेश कुमार सिंह ने कहा कि एकात्म मानववाद एक ऐसी अवधारण है जिसमें मानव शरीर से ही नहीं बल्कि मन, बुद्धि एवं आत्मा के समुच्चय का बोध कराता है। जिस प्रकार शरीर के सभी अंग समुचित रूप से कार्य करते हैं तभी मनुष्य अपने सिद्धि की प्राप्ति कर सकता है, उसी प्रकार समाज और सस्कृति के सभी अंग जब स्वस्थ रूप से कार्य करते हैं तभी एक स्वस्थ समाज एवं सुदृढ राष्ट्र की परिकल्पना संभव है।

उक्त कार्यक्रम में डॉ. अखिल कुमार श्रीवास्तव, डॉ. प्रियंका सिंह, डॉ. अखण्ड प्रताप सिंह, डॉ. रविन्द्र गंगवार और छात्र/छात्रायें उपस्थित थे।

डॉ.(मुरली मनोहर तिवारी)
सूचना एवं जनसम्पर्क प्रभारी